गुड़िया अपने मकान की तलाश में

गुड़िया अपने मकान की तलाश में

शब्दांकन : लिन सुङ-इङ
चित्रांकन : ली क्वोई

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

प्रथम संस्करण १९८४

प्रकाशक **विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह**
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

मुद्रक **पेइचिङ नं० २ ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस**

वितरक **चीनी प्रकाशन विक्रयकेन्द्र (क्वोच्ची शूत्येन)**
पो. आ बाक्स ३९९, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

एक जंगल में किसी की गुड़िया खो गई थी। वह अपने घर का रास्ता भूल गई थी।

जंगल में कोई मकान भी नहीं था। गुड़िया यह सोचकर परेशान थी कि रात होने पर वह कहां सोएगी।

सूरज डूबने वाला था। चिड़ियां अपने-अपने बसेरे में वापस जा रही थीं। गुड़िया भी अपना मकान ढूंढ़ने लगी।

वह एक शहतूत के पेड़ के नीचे पहुंची। उसने देखा कि जंगली रेशम का कीड़ा अपने कोये के मकान में सो रहा है, जिसे उसने अपने ही रेशम के धागे से बनाया था।

गुड़िया ने उसे जगाकर पूछा : "कीड़े भाई, क्या यह तुम्हारा घर है ?" "हां, गुड़िया बहिन, यह मेरा ही घर है। इसमें न तो दरवाजा है और न खिड़की। कितना अच्छा है यह !"
जंगली रेशम के कीड़े ने जवाब दिया।

रेशम का कीड़ा फिर बोला : "इस मकान में मैं पूरी तरह सुरक्षित हूं। चिड़ियां इस पर हमला नहीं कर सकतीं, क्योंकि वे नहीं जानतीं यह क्या है।" "नहीं भाई, यह मकान अच्छा नहीं, क्योंकि इसके अन्दर ताजी हवा नहीं आ सकती।" गुड़िया ने सिर हिलाकर कहा।

गुड़िया वहां से चलकर एक अन्य पेड़ के पास पहुंची, जहां बया पक्षी अपना घोंसला बनाने में लगे हुए थे। उनका घोंसला बड़ी-सी नाशपाती की तरह होता है।

वे घास-फूस के पतले तिनकों को धागे के रूप में इस्तेमालकर अपनी चोंच से बड़ी बारीकी से घोंसला बुन रहे थे। गुड़िया उनसे बोली : "तुम लोग अपना मकान बनाने में बहुत व्यस्त दीखते हो।" "हां, हम मकान बनाकर उसमें अंडे सेएंगे।" बया पक्षियों ने कहा।

बया का घोंसला वृक्ष की टहनी से लटकता रहता है। इसके ऊपरी भाग में अंडे सेने की जगह और निचले भाग में लम्बा-सा बरामदा होता है।

बया पक्षी ने गुड़िया को समझाया : "ऐसे मकान में सांप हमारे अंडे निगलने के लिए भीतर नहीं आ सकता, क्योंकि वह नहीं जानता इसका दरवाजा कहां है।" "मैं ऐसे मकान में रहना नहीं चाहती!" गुड़िया सिर हिलाकर बोली।

गुड़िया ने और आगे जाकर देखा कि धनेश
पक्षी एक वृक्ष के कोटर में अपना मकान बना
रहा है।

मादा धनेश कोटर के अन्दर अंडे सेती है। नर धनेश मिट्टी और तिनके से कोटर के बाहरी भाग पर एक खिड़की बनाता है और खाने की चीजें लाकर मादा धनेश को देता है।

नर धनेश ने गुड़िया से कहा :
"अंडे सेने का काम बहुत कठिन
है। जब अंडों से हमारे बच्चे निकल
आएंगे, तो मैं यह खिड़की तोड़
दूंगा ताकि वे बाहर निकल आएं।"

गुड़िया ने कहा : "यह मकान तो सचमुच अच्छा है। लेकिन मैं धनेश चाची के साथ रहना नहीं चाहती।"

फिर गुड़िया एक छोटी-सी नदी के किनारे आई। उसने देखा कि पानी में बहुत-से गोलाकार मकान बने हुए हैं। वह सोचने लगी कि वे मकान किसके हो सकते हैं।

तभी एक पंजाइटिअस मछली तैरती हुई गुड़िया के समाने आई और बोली : "ये मकान हमारे हैं, अच्छे हैं न ? ये हमने जलघास, मिट्टी और अपने शरीर के चिपचिपे द्रव से बनाए हैं। इनका आधा भाग पानी के ऊपर और बाकी आधा पानी के अन्दर रहता है।

पंजाइटिअस मछली ने आगे कहा : "इन मकानों में हमारे बच्चे रहते हैं। जब वे बड़े हो जाएंगे, तो इन्हें छोड़कर बाहर निकल आएंगे।"

गुड़िया बोली : "ये मकान तो अच्छे हैं, लेकिन पानी में रहना मुझे पसन्द नहीं।"

उसी समय नरकुल की पत्तियों, जलघास और पंखों से बना एक छोटा-सा मकान पानी में नाव की तरह बहता हुआ गुड़िया के सामने आया। यह मकान मादा पनडुब्बी पक्षी का था, जो उस पर बैठी हुई थी।

यह देखकर गुड़िया चिल्लाने लगी : "ध्यान रखो, कहीं तुम्हारा मकान उलट न जाए !"

पनडुब्बी ने कहा : "फिक्र मत करो। मैं अंडे से रही हूं। इस पर बैठकर मुझे लगता है जैसे किसी नाव पर बैठी हूं। हवा के झोंके से मेरा मकान पानी के साथ बहने लगता है। इसमें मुझे बड़ा मजा आता है।"

पनडुब्बी का छोटा-सा मकान पानी के साथ दूर तक बह गया। यह देखकर गुड़िया चिन्ता से बोली : "ओह, यह मकान तो बहुत खतरनाक है!"

तभी एक ऊदबिलाव नदी-किनारे की अपनी खोह से बाहर आया और तेज दांतों से पेड़ के तने काटकर कुंदे बनाने लगा। गुड़िया ने उससे पूछा : "तुम क्या कर रहे हो ?"

ऊदबिलाव ने जवाब दिया : "मैं अपने लिए एक छोटा-सा खोह-नुमा मकान बना रहा हूं और उसकी हिफाजत के लिए इन कुंदों से एक बांध भी बनाऊंगा।" गुड़िया सोचने लगी कि ऊदबिलाव सचमुच बहुत होशियार है, क्योंकि वह केवल मकान ही नहीं बांध भी बना सकता है।

ऊदबिलाव का मकान बिलकुल नदी के किनारे बना हुआ था। उसकी दीवार मोटी और छत गोल थी। मकान में दो दरवाजे थे – एक दरवाजे से ऊदबिलाव जमीन के ऊपर निकल सकता था और दूसरे से पानी में जा सकता था।

ऊदबिलाव पेड़ के तनों और पत्थरों से बांध बनाता है और बीच की दरारों को भीगी मिट्टी से बन्द कर देता है। उसने गुड़िया को बताया : "इस प्रकार, नदी का पानी बढ़ने पर भी मकान पानी में डूब नहीं सकता !"

ऊदबिलाव ने गुड़िया को बुलाकर अपना मकान दिखाना चाहा। लेकिन गुड़िया ने कहा : "शाम होने वाली है। मैं अभी तक अपना मकान खोज नहीं पाई हूं, मैं जाऊंगी।"

ऊदबिलाव एक मछली पकड़कर अपने मकान में जाने लगा। गुड़िया ने सोचा: "इन सब लोगों के पास अपना-अपना मकान है। मेरा मकान आखिर कहां है?"

गुड़िया भी अपना मकान बनाने के लिए पेड़ की टहनियां और पत्तियां तोड़ने की कोशिश करने लगी।

लेकिन पेड़ बहुत ऊंचे थे और गुड़िया के हाथ टहनियों तक न पहुंच सके। इसलिए वह रोने लगी।

उसी समय ईई नामक एक बच्ची वहां आई और बोली : "अरे मैं इतनी देर से तुम्हें ढूंढ़ रही हूं। तुम यहां हो !"

ईई ने गुड़िया को गोद में उठा लिया और कहा : "रो मत, घर वापस चलो। मैंने तुम्हारे लिए एक नया मकान बनाया है।"

गुड़िया का घर एक सुन्दर डिब्बे में बनाया गया था। उसके लिए एक सुन्दर तकिया भी बनाया गया था। यह देखकर गुड़िया बहुत खुश हुई।

अब गुड़िया के मजे हो गए। जब उसे नींद आती, तो वह आराम से अपने मकान में सो जाती।

84-70